Volume-7, No. 2 Aug.-2020, pp. Hin.47-50

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में कृषि भूमि का उपयोगः एक अध्ययन

डॉ0 हरीश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर
भूगोल विभाग, के0जी0के0 कॉलिज, मुरादाबाद उत्तर प्रदेश भारत।

सामान्य परिचय

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा उत्तर प्रदेश के 64 जिलों में मुरादाबाद के 7 तहसीलों में एक ठाकुरद्वारा तहसील जो दो विकास खण्डों में विभाजित है। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा, विकास खण्ड डिलारी ठाकुरद्वारा विकास खण्ड ऐसी अनुपम भौगोलिक परिस्थितियों से परिसीमित है। इसके उत्तर में तराई का क्षेत्र उत्तर पश्चिम में फीका नदी दक्षिण में रामगंगा नदी बहती है जो मुरादाबाद से 48 किमी0 की दूरी पर है।

मुख्य शब्द– ठाकुरद्वारा, **कृषि फसले, कुल भूमि, रबी की फसल, जायद की फसलें,**

स्थिति तथा विस्तार

ठाकुरद्वारा तहसील खण्ड का यह विकास खण्ड प्रकृति द्वारा इतनी अच्छी तरह परिचित है। सम्भवतया कोई अन्य विकास खण्ड नहीं। यह मुरादाबाद जिले से लगभग 48 किमी0 दूर उत्तर में स्थित है। यह दक्षिण पश्चिम की ओर रामगंगा नदी और पश्चिम उत्तर में फीका नदी और उत्तर में तराई का मैदान पूर्व में ढेला नदी के बीच स्थित है इसका अक्षांशीय विस्तार 28 ^{0}12 उत्तरी से 29 ^{0}12 उत्तरी अक्षांशों तथा 78^{0}3 देशान्तर में 78^{0}52 से पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। इसकी पूरब पश्चिम लम्बाई 20 किमी0 तथा उत्तर दक्षिण चौड़ाई 10 किमी0 है। इसका क्षेत्रफल 299.69 वर्ग किमी0 है। यह विकास खण्ड ठाकुरद्वारा तहसील सबसे बड़ा विकास खण्ड है।

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा जिला मुरादाबाद में स्थित है यह जिला उत्तर प्रदेश प्रान्त का एक प्रमुख जिला है। इसकी आकृति त्रिभुज के आकार की है जिसकी चौड़ाई कम और लम्बाई अधिक है ठाकुरद्वारा का खादर का भाग अत्यधिक उपजाऊ है इसका कुछ भाग रामगंगा के खादर में तथा कुछ भाग पठारी है। जो पूर्व में ढेला नदी के क्षेत्र में स्थित है इस तहसील का उत्तरी पूर्वी भाग प्राकृतिक है।

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा क्षेत्र का मैदानी भाग हथियार काल व उसके बाद के युग में हिमालय पर्वत से प्राप्त अवसादों तथा नदियों द्वारा बहाकर लायी गयी मिट्टियों से बना है। यह अवसाद नदियों द्वारा लाकर यहां एक कर दिये गये है। यह चीका, बालू, पत्थर, कंकड व उनका विभिन्न अनुपात में मिश्रण की असंगठित परतों का समूह है जिसके बारे में कोई निश्चित प्रमाण नहीं है। इसकी लम्बाई 37 किमी0 और चौ0 7.5 किमी0 तथा क्षेत्रफल 3872 वर्ग किलोमीटर है। ढाल के गिराव की दर 12 सेन्टीमीटर है 150 मी0 की समोच्च्य रेखायें तहसील के चारों तरफ के विकास खण्डों को निर्धारित करती है।

तहसील ठाकुरद्वारा की संरचना मिट्टी जलवायु तथा भौगोलिक कारकों की देन है इस तहसील का अधिकांश भाग मैदानी होने के कारण कृषि के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहां के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय खेती करना हैं क्योंकि तहसील ठाकुरद्वारा का अधिकांश भाग रामगंगा नदी तथा अन्य नदियों द्वारा बना है। यहां दूसरी प्रमुख नदी ढेला बुढ़नपुर में कटाव का कार्य कर रही है। इसका पिछला पानी दूर तक फैला हुआ है। तहसील ठाकुरद्वारा का सम्पूर्ण क्षेत्र मानसूनी जलवायु के अन्तर्गत आता है। अतः यहां की जलवायु मानसूनी जलवायु है।

ठाकुरद्वारा में भूमि का कृषि उपयोग

कृषि भूमि शब्द मानव उपयोगिता के आधार पर एक महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधन के रूप में प्रयुक्त होता है। भूमि उपयोग का तात्पर्य विभिन्न प्रकार की भूमि जैसे कृषि भूमि का उपयोग कितने क्षेत्रफल पर कृषि की जाती है। कितनी भूमि कृषि अयोग्य है, कितनी भूमि तालाब, नदी, झील, कुओ, नहरों, यातायात परिवहनों में घिरी है। कितनी प्रतिशत भूमि खादर पठारी पट्टी तथा तराई क्षेत्र में आती है और कितने प्रतिशत भूमि उद्योग धन्धों में संलग्न है।

भूमि उपयोग का अध्ययन विकास खण्ड ठाकुरद्वारा के कृषिगत नियोजन में केन्द्रीय स्थान रखता है, ठाकुरद्वारा में तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण मानव और संसाधनों के मध्य सन्तुलन बिगड़ता जा रहा है। उस बिगड़ते असंतुलन को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। इसको दूर करने के दो समाधान है जनसंख्या को नियन्त्रित करना या फिर संसाधनों में वृद्धि करना आदि है। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा की सीमित भूमि पर मानव अपनी विभिन्न आवश्यकताओं जैसे-निवास, उत्पादन, यातायात, मनोरंजन, व्यवसाय आदि की पूर्ति करता है। भूमि उपयोग के अन्तर्गत भूमि नियोजन की नितान्त आवश्यकता है। यह तभी सम्भव हो सकता है जब हमें सभी प्रकार की भूमि की जानकारी हो। अतः प्रत्येक क्षेत्र का विकास करने के लिए भूमि का सर्वोत्तम उपयोग कर सके।

कृषि भूमि उपयोग भूमि उपयोग का एक महत्वपूर्ण अनिवार्य अंग है। भूमि उपयोग के अन्तर्गत ग्रामीण भूमि उपयोग नगरीय भूमि उपान्त भूमि उपयोग का भी गहन अध्ययन किया जाता है ग्रामीण क्षेत्रों मतें भूमि का विभाजन निम्न प्रकार है। कृषि परती, जलाशय, आबादी, रास्ते, मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारा, गिरजाघर आदि में कितनी-कितनी भूमि प्रयुक्त है।

भूमि का वितरण खेतों के प्रतिरूप आदि अनेकों ऐसे तथ्य है जो भूमि उपयोग से सीधे सम्बन्ध रखते है। नगरीय भूमि उपयोग के अन्तर्गत भूमि उपयोग के आधारभूत प्रकारों जैसे- व्यापारिक, आवासीय औद्योगिक किया जाता है। भूमि उपयोग में कई प्रकार की भौगोलिक पेटियां पायी जाती है यह पेटियां नगर के केन्द्र में संकेन्द्रीत होती है और सामान्यत नगर केन्द्र में बढ़ती हुई दूरी के साथ-साथ बदलती हुई लगभग वृत्ताकार स्वरूप ग्रहण करती है तहसील के विभिन्न भागों में भूमि उपयोग भिन्न-भिन्न प्रकार का पाया जाता है। प्रायः आन्तरिक पेटी का भूमि में उपयोग व्यापार से सम्बन्धित होता है बाह्य पेटी में उद्योगों उच्च श्रेणी आवासों, प्रशासकीय इकाईयों, शैक्षणिक संस्थाओं, खेल के मैदान आदि का बहुल्य मिलता है। वस्तुतः नगरीय भूमि उपयोग पर होने वाली सक्रियता ही नगरीय भूमि उपयोग है।

कुल भूमि

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा जनपद मुरादाबाद की अन्य तहसीलों की अपेक्षा सबसे बड़ी तहसील है तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से यह सबसे बड़ी तहसील है। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 299.69 वर्ग किमी0 अर्थात 29969 हेक्टेयर है।

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा एक ग्राम्यांचल का क्षेत्र है। यहां की लगभग सम्पूर्ण भूमि उपजाऊ तथा समतल है। यहां की 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी हुई है। अतः यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि करना है। यहां की बेरोजगार जनसंख्या कृषि कार्य की ओर अधिक आकर्षित है। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा का सम्पूर्ण मैदान नदियों द्वारा बहाकर लायी गयी उपजाऊ मिट्टी से बना है इसलिए अधिक उपजाऊ है। यहां मुख्य रूप से गेहूँ, धान, गन्ना, ज्वार-बाजरा की खेती अधिक होती है। गेहूँ की फसल 16801 हेक्टेयर क्षेत्र पर तथा धान की फसल 17082 हेक्टेयर क्षेत्र पर उगाई जाती है। गन्ने की खेती यहां पर व्यापारिक रूप सेकी जाती है जो कुल भूमि के 7986 हेक्टेयर क्षेत्र पर की जाती है तथा अन्य फसले 1272 हेक्टेयर क्षेत्र पर उगाई जाती है। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में कहीं-कहीं प्रति हेक्टेयर उपज अधिक है तथा कहीं-कहीं बहुत कम है। जैसे- नन्हू वाला, पंडितपुर आदि। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा का क्षेत्रफल विस्तृत भू-भाग पर फैला हुआ है। यहां की जनसंख्या के अन्तर्गत निम्न प्रकार की भूमि का विवरण मिलता है

भूमि विवरण	उपज (हेक्टेयर में)
कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	25818
कृषि योग्य बंजर भूमि	50
वर्तमान परती	226
अन्य परती की भूमि	192
कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	3944
वनों के अन्तर्गत भूमि	3
चरागाह की कुल भूमि	6
उद्यान बागों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल	362
एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्र	14633
शुद्ध बोया क्षेत्रफल	20986

कृषि के अन्तर्गत भूमि उपयोग

कृषि एक महत्वपूर्ण व्यवसाय है। मानव की प्राथमिक आवश्यकताएं कृषि से ही सम्भव है अर्थात सीमित भूमि पर बढ़ती हुई जनसंख्या के भार जीवन निर्वाहन हेतु खाद्य एवं अखाद्य पदार्थों की पूर्ति निश्चित करना कृषि का मूल उद्देश्य है।

सामान्यता कृषि उपयोग से तात्पर्य विभिन्न प्रयोगों में लाई गयी कृषि भूमि से है। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में कृषि उपयोग का सम्बन्ध विभिन्न प्रकार की कृषि उत्पादित भूमि से है। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा के सकल सिंचित क्षेत्रफल एवं सकल बोये गए क्षेत्रफल के अन्तर्गत रबी, खरीफ व जायद की फसलों का विवरण मिलता है।

विकास खण्ड की सबसे अधिक भूमि पर रबी व खरीफ की फसलों में चावल एवं जई की खेती की जाती है, यह फसले तहसील के खाद्यानों में से एक है यह फलसें विकास खण्ड ठाकुरद्वारा के सभी भागों में अधिक संख्या में उगायी जाती है।

सुरजन नगर, शरीफ नगर, मुनीमपुर तथा भामपुर, मधुपुरी माधोवाला, निर्वलपुर, आदि गांवों में बेकार पड़ी बंजर रेह वाली परती भूमि को कृषि के अन्तर्गत लाया गया है। यहां वर्ष में दो फसलें उगायी जाती है। धीरे-धीरे कृषि भूमि में वृद्धि हो रही है।

क्रम संख्या	फसल	उपज(हेक्टेयर में)
1.	रवि की फसल	18095
2.	खरीफ की फसल	22312
3.	जायद की फसल	1148

कृषि फसले-

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा एक कृषि प्रधान नगर है इसके समीपवर्ती नगरों में भी समान रूप से कृषि की जाती है तथा कृषि उपज की सभी भौगोलिक दशाएं विद्यमान है।

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में 35619 हेक्टेयर भूमि पर कृषि की जाती है तथा विकास खण्ड में सामान्यतः सभी प्रकार की कृषि फसलें उत्पन्न की जाती है जो निम्न प्रकार से है, जैसे-

1. **रबी की फसल:-** विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में रबी की फसलें 18095 हेक्टेयर भूमि पर उगाई जाती है। रबी में उत्पन्न की जाने वाली फसलें प्रमुख खाद्यान्नों वाली फसलें है जिसपर

अधिकांश जनसंख्या निर्भर करती है। विकास खण्ड में रबी की फसलों के अन्तर्गत निम्न प्रकार की फसलें बोयी जाती है। जैसे- **गेहूं, जौ, आलू, चना, मटर, अलसी, सरसो, मसूर आदि।**

2. **खरीफ अथवा वर्षा ऋतु की फसलें-** विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में खरीफ की फसलें 22312 हेक्टेयर भूमि पर उगाई जाती है खरीफ की फसलों का खाद्यान्न फसलों में प्रमुख स्थान है। खरीफ की फसलें सबसे अधिक जनसंख्या के भरण-पोषण की व्यवस्था करती है। विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में खरीफ एवं वर्षा ऋतु में निम्न प्रकार की फसलें उगायी जाती है। जैसे- चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंग, उडद, गन्ना, राई, तम्बाकू, इत्यादि।
3. **जायद की फसलें-** विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में जायद की फसलें 1148 हेक्टेयर भूमि पर उगायी जाती है। यह ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में बोयी जाती है विकास खण्ड की जायद की फसलों में खरबूजा प्रमुख है। यहां पर जायद की फसलों के अन्तर्गत निम्न प्रकार की फसलें बोयी जाती है। जैसे- मूंग, ककड़ी, खरबूजा, तरबूज एवं अन्य शाक-सब्जियां एवं हरे चारे वाली सब्जियाँ।

विकास खण्ड में 20986 हेक्टेयर भूमि कृषि के अन्तर्गत आती है तथा 3944 हेक्टेयर अकृषित भूमि है। कृषि उत्पादन की दृष्टि से यहां प्रति हेक्टेयर उपज अधिक है तथा इसका कृषि क्षेत्र के जिले में प्रथम स्थान है। प्राचीन समय से ही यहां पर कृषि की प्रधानता रही है।

चरागाह के अन्तर्गत भूमि

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा का कुल भूमि क्षेत्रफल 25818 हेक्टेयर है जिसमें से 06 हे0 भूमि चारागाह के अन्तर्गत आती है। वनों के अन्तर्गत 03 हेक्टेयर भूमि को शामिल किया जाता है। भूतकाल में यहां के अन्तर्गत 40 हेक्टेयर भूमि आती थी। जैसे-जैसे धीरे-धीरे इस क्षेत्र की जनसंख्या बढ़ती गई वैसे ही जनसंख्या की खाद्य पदार्थों की मांग बढ़ती गयी, जिस कारण कृषि की आवश्यकता भी बढ़ी जिसलिए इस भूमि को कम करके इसे कृषि के काम में लाया जाने लगा। चारागाह के अन्तर्गत भूमि में कमी आती गयी उस समय सम्पूर्ण कृषि पशुओं पर आधारित थी परन्तु जबसे मशीनी युग आया तब से पशुओं को कम महत्व दिया जाने लगा। आज के वैज्ञानिक युग में कृषि की नई-नई तकनीकी विधियों के द्वारा कृषि की जाने लगी आज की सम्पूर्ण कृषि मशीनों पर निर्भर करती है। इस समय स्थायी चारागाह के अन्तर्गत वरसीन, लोबिया, चरई, बाजरा, गन्ने का अगोला, मक्का आदि पशुओं के लिए प्राप्त होता है। धीरे-धीरे यहां चारागाह वाली भूमि कम होती जा रही है जिससे पशुओं पर गहरा प्रभाव पड़ा है। कृषि कार्य में मशीनों का अधिक से अधिक प्रयोग होना, खाद्य पदार्थों की बढ़ती हुई मांग कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए नई-नई तकनीकी विधियों का प्रयोग आदि चारागाह कम होने का मुख्य कारण है।

कृषि योग्य बंजर भूमिः-

50 हेक्टेयर भूमि किसी भी काम में नहीं आ रही है। लेकिन इसको प्रयत्नों द्वारा कृषि योग्य बनाया जा रहा है। विकास खण्ड के लिए इस भूमि का काफी महत्व है, क्योंकि यहां की बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकता को पूरा करने के लिए कृषि के विस्तार की काफी आवश्यकता है। इसमें कुछ भूमि ऐसी शामिल है, जो पहले कृषि के अन्तर्गत रह चुकी है, परन्तु अब कुछ चरणों से मालिकों द्वारा बेकार छोड़ दी गई है। कुछ भूमि में रेह है, जिससे भूमि की उर्वरता नष्ट हो चुकी है। कुछ समय से भारतीय सरकार संस्थाओं के माध्यम से सरकारी जानकारी देकर आर्थिक सहायता देकर इस भूमि को कृषि योग्य बना रही है।

विकास खण्ड ठाकुरद्वारा में 49 हेक्टेयर भूमि ऊसर है एवं कृषि के अयोग्य है। ये भूमि छोटे-छोटे भूखण्डों में भिन्न-भिन्न स्थानों पर देखी जा सकती है। बंजर भूमि उबड़-खाबड़ होती है। इसमें रेत की अधिकता मिलती है एवं कुछ क्षेत्रों में बंजर भूमि पर ऊंचे-नीचे भूखण्ड, कटीली झाड़ियां, घास एवं छोटे भूदर्रे मिलते है। विकास खण्ड के सभी भागों में बंजर भूमि का विस्तार समान होने के कारण कृषक वर्ग के लोगों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसका कारण यही है कि यहां पर जिन भागों में ऊसर भूमि का विस्तार अधिक है वहां पर उपजाऊ भूमि की अधिकता कम हो जाती है जिसके कारण वहां के लोग श्रम पूर्ति पर ही निर्भर करते है।

कृषि समस्याएं एवं उनका समाधान

ठाकुरद्वारा विकास खण्ड का बहुत सा भाग समतल नहीं है और सिंचाई के साधनों का कम होना तथा कुछ स्थानों पर जमीन में भूमिगत जल का अभाव है कालेवाला, माधोवाला, निर्वलपुर, गोपीवाला आदि। इस प्रकार से ठाकुरद्वारा विकास खण्ड की कृषि की समस्या इस प्रकार हैः

1. पुराने बीजों का प्रयोग।
2. खाद तथा उर्वरकों का प्रयोग कम।
3. भूमि उत्पादन एवं संरक्षण की समस्या।
4. खेतों के आकार का छोटा होना।
5. रोग तथा कीड़ों से फसलों का नुकसान।
6. क्षेत्र के किसानों का अब भी रूढिवादी होना।
7. भूमि की उर्वरा शक्ति में कमी आना।
8. पूंजी की अपर्याप्तता।

अतः उक्त समस्याओं का निदान करके उत्पादन को भी दुगना किया जा सकता है।

सिंचाई के साधनों का ठाकुरद्वारा में काफी विस्तार योजनाओं के द्वारा किया जा रहा है परन्तु जहां पर ये सुविधा नहीं है वहां किसान अपने निजी साधन बोरिंग नलकूप, नहर, तालाब और नलकूप से

सिंचाई कर लेते है। जहां पर बोरिंग नहीं लगते है उन क्षेत्रों की नहर वर्ष में 8 माह पानी प्रदान करती है। खाद आपूर्ति के लिए किसान सहकारी संघ द्वारा खाद तथा किसान सेवा केन्द्र कृषि की आधुनिक विधियों से किसानों को प्रशिक्षित करते हैं तथा रोग-बीमारी आदि के बारे में जानकारी देते हैं। हमें यह उत्पादन क्षमता और बढ़ानी है तभी भविष्य में बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न आपूर्ति कर सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 एस0डी0 कौशिक (2013), ''मानव भूगोल'', रस्तोगी पब्लिकेशन, शिवानी रोड, मेरठ।
2. मंजूलता सिंह (President of Sure) (2018),''कृषि मन्जुषा'', (Journal of Agri-search) अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका, वाराणसी।
3. करूणेश प्रताप सिंह, (2017), ''सामान्य कृषि उपयोग एवं कृषि उपयोग'',
4. सांख्यिकी पत्रिका (2020), जनपद मुरादाबाद
5. डॉ0 अंशु विश्नोई (जून 2017)''जनपद आगरा में कृषि विकास एवं भूमि उपयोग एक भौगोलिक अध्ययन''
6. डी.एस. श्रीवास्तव (1993) ''कृषि के परिवर्तनशील प्रतिरूपों का भौगोलिक अध्ययन'', शाहजापुर जनपद क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
7. सिंह, बृज भूषण (1996) ''कृषि भूगोल'', ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर
8. धाबाई, अशोक कुमार (2006) ''मांगरोल तहसील में बदलता हुआ कृषि भूमि उपयोग'' पर शोध कार्य
9. रामाप्रसाद व सत्यवीर यादव (2007)- ''कृषि पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण नियोजन''
10. जिला सांख्यिकीय रूपरेखा 2016-17